विचार बिन्दु

दुःख और वेदना के अथाह सागर वाले इस संसार में प्रेम की अत्यधिक आवश्यकता है। –डॉ. रामकुमार वर्मा

हम कितना जानते हैं और हमारे पास कितना ज्ञान है का फ़र्क!

एक कहावत है नॉलेज इज़ पॉवर – ज्ञान ही ताकत है। ज्ञान अर्थात जानना। इसलिए गंभीरता से यह जानना जरूरी है कि हम कितना जानते हैं? तभी हम जान पाएंगे कि हमारे पास कितनी ताकत है। यदि नॉलेज इज़ पॉवर है तो जितना जानेंगे उतनी ही ताकत भी होगी। इसीलिए यह प्रश्न कोई कम महत्व का नहीं है कि हम कितना जानते हैं या हमारे पास कितना ज्ञान है? जानने की इस खोज के रास्ते पर निकलने पर सबसे पहला सवाल तो यही खड़ा हो जाता है कि वह ज्ञान क्या है जो हमें लगातार जानते रहने तथा साथ में कुछ नया जानने की ताकत देता है? क्या ज्ञान सिर्फ जानकारी का भंडार होता है? क्या जिसके पास जितनी अधिक जानकारी है वह उतना अधिक ज्ञानी माना जा सकता है? सीधे-सीधे यह भी पूछा जा सकता है कि क्या जानकार होना और ज्ञानी होना एक समान माना जा सकता है? इक्कीसवीं सदी में आई नई डिजिटल यंत्र प्रौद्योगिकी ने जानकारी रखने के मामले में सबको बराबर कर दिया है। अब जानकारी के भंडार की कुंजी चाहे जिसे मिल सकती है। कोई यह नहीं कह सकता कि अमुक जानकारी सिर्फ मेरे पास है। अंतर्जाल पर सर्च इंजिन के जरिए कोई भी कैसी भी जानकारी, उसके सारे पहलुओं समेत, कंप्यूटर की स्क्रीन पर एक क्षण में पा सकता है। एआई अर्थात कृत्रिम बुद्धि अब हमारी जरूरत की सामग्री ज्ञान के अथाह भंडार से निकाल कर तुरंत उपलब्ध करा देती है। जिसके पास भी इंटरनेट से जुड़ा कम्प्यूटर, लैपटॉप, आईपेड या स्मार्टफोन है और उसे अंतर्जाल में खोजने की सुविधा है तो क्या वह सबसे बड़ा ज्ञानी माना जा सकता है? इसके जवाब में स्वाभाविक ही विद्वान लोग कहेंगे कि केवल जानकारी का किसी के पास होना ज्ञानी होना नहीं हो सकता। विज्ञान भी हमें नई-नई जानकारियां देता है, लेकिन ऐसा भी नहीं है कि विज्ञान की जानकारियां रखने वाले सभी लोग विज्ञानी मान लिये जाएं। विद्वान कहते हैं ज्ञान और जानकारी का फ़र्क हम चेतना के स्तर पर कर सकते हैं। इस पर फिर नया सवाल उठ खड़ा होता है कि चेतना क्या होती है? क्या चेतना के भी कई स्तर होते हैं? यदि ऐसा है तो क्या मानव चेतना का भी विकास हुआ है और भविष्य में उसके और विकसित होने की संभावनाएं हैं? क्या मन को चेतना माना जा सकता है? कहा जाता है कि हमें अनुभव आत्मा से होता है। तो क्या मन ही आत्मा है? स्वयं अपना अनुभव हम अपनी आत्मा से करते हैं, तो क्या आत्मा ही चेतना है? जो चेतन नहीं है वह जड़ है। जो जड़ है वह निर्जीव है। मगर साथ ही यह भी कहा जाता है कि समस्त सृष्टि एक है? हजारों वर्ष पहले वेदिक ऋषियों ने यह कैसे कह दिया कि समस्त चराचर जगत एक है? उन्होंने जो कहा उसे आधुनिक विज्ञान ने भौतिक प्रयोगों से सिद्ध भी कर दिखाया है। प्रत्येक सजीव और जड़ पदार्थ की सूक्ष्मतम इकाई अणु में भी वैज्ञानिकों ने गतिमान और स्थिर अंश पाये। प्रत्येक अणु एक प्रकार से अपने अंदर एक सम्पूर्ण सूक्ष्म ब्रह्मांड लिये मौजूद होता है। विज्ञान की नई खोजों के साथ आज हम क्वांटम भौतिकी तक पहुंच गये हैं। वैज्ञानिक ऋषि परंपरा विस्मृत हो गई तो हम भारत के लोगों ने कभी भौतिक प्रयोगों से इसे जानने या सिद्ध करने का कोई प्रयास नहीं किया। मगर पश्चिम के लोगों ने आधुनिक भौतिक विज्ञान के जरिए इसे साबित कर दिया है। सभी पदार्थ, अणु, परमाणु, नाभिक, सर्वदा गतिमान पॉजिटिव व निगेटिव एलेक्ट्रोन और उनके साथ में फोटोन का ब्रह्मांड लिए हुए होते हैं। सजीव और जड़ में यही फरक है कि सजीव प्रजनन से संतानोत्पति करते हैं, जड़ ऐसा नहीं करते हैं। मगर दोनों में अणुओं की संरचना एक सी होती है। वैज्ञानिकों ने इन्हें जाना तो उन्हें ज्ञान हुआ कि अभी तो जानने की संभावनाएं अनंत हैं। इसलिए इस सवाल को यदि यूं पूछा जाय कि हम वास्तव में कितना जानते हैं, या जान सकते हैं तो मुश्किल खड़ी हो जाती है। सवाल फिर वहीं का वहीं रह जाता है कि ज्ञान क्या है? क्या ज्ञान एक तर्कसंगत समझ है या इंद्रियों का अनुभव जो हमें यथार्थ तथा प्रकृति को जानने की क्षमता देता है। जानना देखने से आता है। इसीलिए जानने की बात आती है तो प्रमाण की बात भी आती है।

महादेवी वर्मा ने यह भी कहा कि विज्ञान तो विश्लेषण करता है और साहित्य संश्लेषल करता है। जैसे एक वैज्ञानिक किसी फूल को समझने के लिये उसकी एक एक पंखुड़ी अलग करके जांचेगा, उसके अन्य हिस्सों को काट के देखेगा वहीं दूसरी तरफ साहित्यकार चीजों को जोड़ कर देखता है। इसीलिए मानव जाति के विकास में उसकी चेतना के विकास को कम करके नहीं आंका जा सकता।

किसी ने उचित ही कहा है कि ज्ञान क्या है, इसकी जांच नीचे से शुरू करना बेहतर तरीका हो सकता है। अवधारणात्मक ज्ञान के मुख्य प्रतिमान सामान्य जीवन और भाषा होते हैं और दोनों में पहले समझ पैदा करनी पड़ती है। क्या यह इंद्रिय अनुभव है जिसने दर्शनशास्त्र को प्रमाण की धारणा दी? या क्या यह खुद अपने अंदर इतना स्पष्ट है कि उसे प्रमाण की कोई आवश्यकता नहीं होती है? मगर कुछ व्याख्या तो की ही जा सकती है। जैसे ज्ञान की धारणा में पहली बात तो यह निहित है कि ज्ञान आवश्यक रूप से सत्य होता है। मगर सत्यता में विश्वास तथा सत्यता के लिए पर्याप्त प्रमाण भी जरूरी है। विद्वान बताते है कि एक प्रकार का ज्ञान वह है जो अनुभव के पश्चात् प्राप्त होता है। ऐसा ज्ञान वैदिक ऋषियों ने प्राप्त किया। दूसरे प्रकार का वह ज्ञान होता है जो ऐसे प्रयोग, निरीक्षण तथा अनुभव पर केन्द्रित होता है जिसे अकादमिक लोग अन्यों के पाठों के अध्ययन से विकसित करते हैं। तीसरे प्रकार का ज्ञान अनुभव से परे का होता है। उसे समझ पाना थोड़ा मुश्किल होता है। इस प्रकार के ज्ञान के सम्बन्ध में यह धारणा भी है कि अनुभव केवल तथ्य ही देता है परन्तु तथ्य किसी बात को सिद्ध नहीं करते। उनसे सत्य का ज्ञान उस समय तक नहीं हो सकता जब तक कि उनको संगठित न किया जाए। वे तर्क द्वारा संगठित किये जाते हैं। इस प्रकार तर्क या बुद्धि से अनुभव ज्ञान में परिवर्तित होता है। अनोखी बात यह है कि हर बार ज्ञान की खोज में एक ऐसी सीमा आ जाती है जब उसके आगे जो है वह अज्ञेय रह जाता है। महान लेखिका महादेवी वर्मा का कहना था कि नया जानना निरंतर रहता है। उसका कोई अंत नहीं होता। जो-जो जान लिया जाता है वह विज्ञान होता चला जाता है। जानने के बाद भी जो अज्ञेय रह जाता है उसकी खोज जारी रहती है। लेकिन महादेवी वर्मा ने यह भी कहा कि विज्ञान तो विश्लेषण करता है और साहित्य संश्लेषल करता है। जैसे एक वैज्ञानिक किसी फूल को समझने के लिये उसकी एक एक पंखुड़ी अलग करके जांचेगा, उसके अन्य हिस्सों को काट के देखेगा वहीं दूसरी तरफ साहित्यकार चीजों को जोड़ कर देखता है। इसीलिए मानव जाति के विकास में उसकी चेतना के विकास को कम करके नहीं आंका जा सकता। यदि इस वैज्ञानिक अवधारणा को मान लिया जाए कि जीव जगत में मानव सीधे नहीं उतरा बल्कि उसका विकास हुआ है – इवॉल्यूशन के सिद्धांत की बात हो – तब यह सवाल होना स्वाभाविक ही है कि जब मानव के शरीर का विकास हुआ, उसके मस्तिष्क का विकास हुआ, तब क्या मानव चेतना का भी विकास हुआ माना जाना चाहिए? इस जटिल विषय पर भारतीय साहित्य के बड़े हस्ताक्षर सच्चिदानद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय के नेतृत्व में कुछ दशकों पहले जयपुर में एक राष्ट्रीय गोष्ठी में गहन विमर्श हुआ था जिसमें साहित्य, मनो और चिकित्सा विज्ञान के विशेषज्ञों ने लंबी चर्चाएं की थी।

चेतना के विकास को बुद्धि का विकास भी कह सकते हैं। बहुतेरे लोग यह मानते हैं कि इसमें कुछ भी रहस्यमय नहीं है। बुद्धिमान जीव आम तौर पर बेहतर जीवन व्यतीत करते हुए अपनी जीवनयात्रा पूरी करते हैं और वे अन्यों की तुलना में अधिक संतानों वाले होते हैं। हालांकि ऐसा निश्चित रूप से परिस्थितियों पर निर्भर करता है। एक बार जब बुद्धिमान प्राणी प्रौद्योगिकी विकसित करते हुए अपनी ही प्रजाति के आत्म-विनाश की क्षमता हासिल कर लेते हैं, तो ज्ञान का लाभ अनिश्चित हो जाता है। दिमाग और बुद्धि के विकास से जो ज्ञान हासिल होता है वह प्रकृति के नियमों से निपटने के लिए मानव को तेजी से सक्षम बनाता है। कुछ वैज्ञानिक तो यह मान कर भी चलते हैं कि प्रकृति विकासशील नहीं विनाशकारी होती है। उनका तर्क है कि प्राकृतिक आपदाओं के कारण पृथ्वी ने अपने जीवनकाल में अब तक पांच बार प्रलय को भुगता है, जब इस धरती पर से जीवन पूरी तरह समाप्त हो गया। मगर यह ज्ञान अब भी अज्ञेय बना हुआ है कि पहला चेतन जीवन कैसे बना? हालांकि बीसवीं सदी के महान वैज्ञानिक आइंस्टीन ने कहा था कि, ब्रह्मांड की सबसे अतुलनीय संपत्ति यह है कि यह इतना समझ में आने योग्य है। किन्तु अनुभव बताता है कि ब्रह्मांड को जितनी गहराई तक पहुंचा जा रहा है उससे उसकी उत्पत्ति की कोई एकीकृत समझ निकट आती नज़र नहीं आ रही है। ज्ञान और विज्ञान में एक समानता जरूर है कि दोनों में संशय का महत्व होता है, उसकी मान्यता होती है। संशय ही आगे की खोज को प्रेरित करता है। चाहे वह अंदर का ज्ञान – अध्यात्म – हो या बाहरी भौतिक जगत का विज्ञान हो। इसलिए ज्ञान और विज्ञान दोनों ही मानव की समझ और प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ज्ञान और विज्ञान के बीच अंतर और समानता को पहचानना ही जीवन के मूल्यों को बेहतर ढंग से समझना हो सकता है।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

डबल इंजन सरकार का करिश्मा

कांग्रेस के फेक नैरेटिव को ध्वस्त कर उपचुनावों में ऐतिहासिक जीत दिलाई

राजेन्द्र राठौड़

राजस्थान के इतिहास में पहली बार किसी सत्तारूढ़ दल ने उपचुनाव में अधिकांश सीटों पर विजय प्राप्त की है। 7 विधानसभा सीटों में से 5 विधानसभा सीटों में भाजपा के पक्ष में ऐतिहासिक परिणाम साधारण पृष्ठभूमि से ताल्लुक रखने वाले, भाजपा के जमीनी कार्यकर्ता से लेकर विधायक और फिर मुख्यमंत्री तक का सफर तय करने वाले मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा जी के कुशल नेतृत्व और संगठन के अथक प्रयासों का प्रमाण है। महज 11 महीने के कार्यकाल में जनता का सरकार के प्रति बढ़ता विश्वास यह दर्शाता है कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने इस उपचुनाव में स्वयं को "आम आदमी का मुख्यमंत्री" साबित किया है।

राजस्थान विधानसभा उपचुनाव में सलूंबर, खींवसर, झुंझुनूं, देवली उनियारा, और रामगढ़ यानी 5 सीटों पर भाजपा की शानदार जीत का श्रेय डबल इंजन की सरकार की जनकल्याणकारी नीतियों, योजनाओं व सत्ता-संगठन के सुदढ़ तालमेल को जाता है।

यह जीत न केवल ऐतिहासिक है बल्कि यह दर्शाती है कि कैसे एक सत्तारूढ़ दल ने शानदार रणनीति अपनाते हुए विपक्ष द्वारा बनाए गए फेक नैरेटिव को ध्वस्त कर जनता के बीच अपना विश्वास और समर्थन स्थापित करके विपक्ष को करारा जवाब दिया है। राजस्थान उपचुनावों के दौरान कांग्रेस नेतृत्व जनता के मुद्दों पर चर्चा करने के बजाय़ मनोरंजन और डांस करने में व्यस्त नजर आया जो जनता को बिल्कुल पसंद नहीं आया और इसका फायदा भी भाजपा को मिला। भाजपा संगठन ने एकमुखी-एकजुट होकर विधानसभा सीटों पर पैनी नजर रखी, छोटे-बड़े कार्यकर्ताओं, भाजपा नेताओं, विधायकों व मंत्रियों को फील्ड में उतारकर कांग्रेस की तमाम रणनीतियों को विफल साबित कर दिखाया।

कांग्रेस द्वारा लगाए गए निराधार आरोपों और पिछले कार्यकाल में जनता के बीच बिगड़ी साख का भाजपा ने पूरी मजबूती से जवाब दिया। प्रदेश की जनता को विश्वास हो गया है कि जो कार्य विगत 5 साल में कांग्रेस ने कभी नहीं किये, वो राज्य सरकार ने 11 माह के अल्पकाल में कर दिखाये हैं जैसे संशोधित पार्वती-कालीसिंध-चंबल-ईआरसीपी पर एमओयू हो या 30 वर्ष बाद बहु प्रतीक्षित यमुना जल बंटवारा समझौते पर एमओयू हो, मात्र 450 रुपये में गैस सिलेंडर हो, गेहूं के न्यूनतम समर्थन मूल्य पर 125 रुपये प्रति क्विटंल का बोनस हो या पीएम किसान सम्मान निधि में 2 हजार रुपये की बढ़ोतरी हो या पेपरलीक माफियाओं पर कड़ी कार्रवाई हो। ऐसे तमाम फैसलों से स्पष्ट है कि भाजपा सरकार का लक्ष्य जनता की सेवा करना है। सत्ता में आते ही राज्य सरकार ने विगत कांग्रेस सरकार में बिगड़ी हुई बुनियादी व्यवस्थाओं को व्यवस्थित करने के लिए व्यापक रोडमैप बनाया और जनता के हित में कई कड़े व सख्त कदम लिये।

कांग्रेस सरकार के कार्यकाल में हुई 17 पेपरलीक होने से युवाओं का सरकार पर विश्वास उठ गया था। राज्य सरकार ने आते ही इन मामलों की जांच के लिए एसआईटी का गठन किया और 100 से ज्यादा पेपर माफियाओं को सलाखों के पीछे पहुंचाया। इसके साथ ही, नई युवा नीति लाने की घोषणा और आगामी 2 वर्षों के लिए परीक्षा तिथि व परिणामों के साथ भर्ती परीक्षाओं के लिए एक विस्तृत कैलेंडर जारी करके सरकार ने युवाओं को आश्वस्त किया कि अब उनकी मेहनत के साथ कोई खिलवाड़ नहीं होगा। इसके साथ ही अगले 5 साल में 4 लाख सरकारी नौकरियां देने का जो लक्ष्य रखा है, वह युवाओं के भविष्य को उज्जवल बनाने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है। गत कांग्रेस सरकार ने राजस्थान की अर्थव्यवस्था का बंटाधार करते हुए भाजपा सरकार को 5.79 लाख करोड़ रुपये का कर्ज विरासत के रूप में दिया जिसे अब राज्य सरकार कम करने में लगी है। राज्य सरकार ने अपने पहले पूर्णकालिक बजट 2024-25 में विकसित राजस्थान 2047 का लक्ष्य प्रस्तुत करते हुए हर वर्ग-युवाओं, महिलाओं, किसानों, व्यापारियों और युवाओं के लिए अहम योजनाएं पेश की। पहली बार राज्य के बजट में कोई नया कर नहीं लगाया गया, जिससे महंगाई से जूझ रही जनता को राहत मिली। सरकार ने बुनियादी सुविधाओं जैसे पानी, बिजली, सड़क के विकास पर विशेष ध्यान दिया।

आज हिन्दुस्तान की इकोनॉमी में राजस्थान का भी अहम योगदान है। बजट में 350 बिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने का खाका खींचा गया है, जो राजस्थान को विकसित राज्यों की श्रेणी में ले जाने की सरकार की स्पष्ट मंशा को दर्शाता है।राजस्थान में प्रति व्यक्ति आय़ करीब 1.67 लाख रुपये सालाना है जिसे बढ़ाने के लिए सरकार निरंतर प्रतिबद्ध है। राज्य सरकार के पहले 5 माह के अल्पकाल में ही राज्य की जीएसडीपी जो राज्य के विकास का सूचकांक है, दिसंबर 2023 में 11.58 प्रतिशत थी अब बढ़कर 12.56 प्रतिशत हो गई है। यह अल्पकालिक सफलता दर्शाती है कि राज्य अब विकास की दिशा में तेजी से अग्रसर है। राइजिंग राजस्थान ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट 2024 जैसे आगामी आयोजनों के माध्यम से सरकार ने निवेश के लिए एक नया वातावरण तैयार किया है। इस समिट में 25 देशों के प्रतिनिधियों की भागीदारी राज्य के लिए बड़ी उपलब्धि साबित होगी। हाल ही में राइजिंग राजस्थान ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट 2024 के तहत ऊर्जा विभाग की प्री-समिट में अक्षय ऊर्जा क्षेत्र में निवेश के लिए लगभग साढ़े 6 लाख करोड़ के एमओयू साइन किए गए जो ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर होते राजस्थान को दिखाता है। राजस्थान की भौगोलिक स्थिति और प्राकृतिक संसाधन उसे नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में अग्रणी बनाते हैं। यहां पर सबसे अधिक सूर्य दिवस हैं, जिसके कारण राज्य सौर ऊर्जा उत्पादन में अद्वितीय स्थिति में है। राज्य सरकार ने केवल योजनाएं बनाकर नहीं बल्कि उन्हें जमीनी स्तर पर लागू करके यह सुनिश्चित किया कि डबल इंजन की सरकार का फायदा बिना किसी बाधा के राज्य के हर नागरिक मिले। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के सपनों के आत्मनिर्भर भारत के संकल्प में राजस्थानभी अहम भूमिका निभा रहा है। आज के परिप्रेक्ष्य में नई युवा नीति, नई खनन नीति और नई औद्योगिक नीति निश्चित तौर पर राजस्थान को आगे बढ़ाने में मील का पत्थर साबित होगी।

राज्य सरकार के इतने अल्प समय मे लिये गये ऐतिहासिक निर्णयों से घबराई कांग्रेस ने 'पर्ची सरकार' का आरोप लगाकर अपनी विफलताओं को छुपाने की कोशिश की है लेकिन उनके इस आरोप को जनता ने इन उप चुनावों में वोट की चोट से पूरी तरह खारिज कर दिया। राज्य सरकार ने अपने 11 महीने के कार्यकाल में ऐसा कोई भी निर्णय नहीं लिया जो बंद दरवाजों के पीछे या पक्षपातपूर्ण तरीके से लिया गया हो। हर योजना और नीतिगत निर्णय जनता के सामने खुले मंच पर रखा गया।उपचुनाव की यह जीत केवल भाजपा नेतृत्व के साथ उन लाखों कार्यकर्ताओं और समर्थकों की भी है जिन्होंने दिन-रात कड़ी मेहनत की।

राजेन्द्र राठौड़, पूर्व नेता प्रतिपक्ष।

प्रवासियों का दृष्टिकोण : उलाहना मत दीजिए

उलाहना देना भारतीय समाज का एक अनोखा हिस्सा है, यह हमारे रिश्तों की गहराई और हमारे संवाद की जटिलता को दिखाता है

डॉ. पंकज राजवंशी

कभी आपने ग़ौर किया है कि जब आप किसी पुराने दोस्त को फोन करते हैं, तो उसकी पहली प्रतिक्रिया क्या होती है? अक्सर, यह एक हल्की शिकायत या मज़ाक में लिपटी टिप्पणी होती है। "अरे, अब तो तुम बड़े आदमी हो गए हो। फोन करना ही भूल गए। आज कैसे याद किया?" सुनने में यह वाक्य सामान्य हंसी-मजाक जैसा लगता है, लेकिन यह केवल मजाक नहीं है। इसके पीछे गहरी भावनाएं और एक ख़ास तरह की आदत छिपी होती है।

यह आदत सिर्फ़ दोस्ती तक सीमित नहीं है। भारत में, रिश्तेदारों, दोस्तों, यहां तक कि पड़ोसियों के बीच बातचीत में भी ऐसा ही देखने को मिलता है। कोई सीधे यह नहीं कहता, "बहुत खुशी हुई तुम्हारा फोन आया," बल्कि हमेशा शिकायत या उलाहने का सहारा लिया जाता है। यही आदत हमारे समाज में इतनी गहराई से जड़ें जमा चुकी है कि हम इसे सामान्य मानने लगे हैं।

मनोविज्ञान के नज़रिए से देखें तो उलाहना देना हमारे मन में छिपी असुरक्षा या रक्षात्मकता को व्यक्त करने का तरीका हो सकता है। जब हम ख़ुद को कमतर महसूस करते हैं, या जब हमें लगता है कि कोई हमें उतनी अहमियत नहीं दे रहा जितनी हम चाहते हैं, तो हमारी यह भावना अक्सर शिकायत के रूप में बाहर आती है। उदाहरण के लिए, अगर कोई दोस्त कहता है, "तुम तो अब फोन ही नहीं करते," तो वह अनजाने में यह व्यक्त कर रहा होता है कि उसे डर है कि शायद आप उसे भूल गए हैं। वह इसे सीधे तौर पर स्वीकार नहीं कर पाता, इसलिए शिकायत को अपनी बात कहने का जरिया बना लेता है।

कुछ ऐसा ही व्यवहार रिश्तेदारों के बीच भी होता है। अगर कोई रिश्तेदार विदेश में रहने वाले परिवार के पास आता है, तो वह यह कहेगा, "यहां तो सब सुख-सुविधाएं हैं, हमारे यहां तो कुछ नहीं है।" यह सिर्फ उनके जीवन की कठिनाइयों की बात नहीं है, बल्कि कहीं न कहीं वे अपने जीवन और आपकी स्थिति के बीच तुलना कर रहे होते हैं। उनकी यह टिप्पणी असुरक्षा, तुलना, और कभी-कभी ईर्ष्या का मिश्रण होती है।

भारतीय समाज में इस आदत की जड़ें हमारी सांस्कृतिक परंपराओं में हैं। भारत में रिश्तों और परिवार को बहुत महत्व दिया जाता है। यह समाज सामूहिकता पर आधारित है, जहां एक व्यक्ति का जीवन उसके रिश्तों और समाज से गहराई से जुड़ा होता है। लेकिन, इसके साथ ही, हमारी संस्कृति में खुलकर अपनी भावनाएं व्यक्त करने की आदत कम ही है। लोगों को सीधे तौर पर अपनी खुशी, कृतज्ञता या यहां तक कि असहमति व्यक्त करने में झिझक महसूस होती है। अक्सर इसे अप्रत्यक्ष तरीकों, जैसे उलाहनों या हल्की-फुल्की शिकायतों के जरिए व्यक्त किया जाता है।

अगर आप लंबे समय तक अमरीका जैसे देशों में रहें, तो इस आदत का अंतर और साफ नज़र आता है। वहां लोग सीधे तौर पर अपनी भावनाएं व्यक्त करते हैं। अगर कोई दोस्त आपको फोन करता है, तो वह कहेगा, "It's so nice to hear from you!" यानी, "तुमसे बात करके बहुत अच्छा लगा।" लेकिन भारत में, यही भावना व्यक्त करने का तरीका उलट होता है। यहां लोग कहेंगे, "अब तो तुम हमको भूल ही गए हो।" इस रवैये के पीछे कहीं न कहीं यह उम्मीद होती है कि आप अधिक ध्यान देंगे, उन्हें यह महसूस कराएंगे कि वे आपके लिए ख़ास हैं। यह आदत मनोवैज्ञानिक कारणों से भी पैदा होती है। एक बड़ी वजह है आत्मसम्मान। जब लोग अपनी तुलना दूसरों से करते हैं और यह महसूस करते हैं कि सामने वाला उनसे बेहतर स्थिति में है, तो वे खुद को असुरक्षित महसूस करते हैं। यह असुरक्षा शिकायत और उलाहनों के रूप में बाहर आती है।

इस आदत को समझने के लिए एक और अहम पहलू है सामाजिक तुलना। भारत जैसे समाज में लोग अपनी स्थिति, उपलब्धियों और जीवनशैली की तुलना दूसरों से लगातार करते रहते हैं। जब वे देखते हैं कि कोई और उनके मुकाबले बेहतर स्थिति में है, तो उनकी प्रतिक्रिया अक्सर एक हल्के उलाहने के रूप में आती है। उदाहरण के तौर पर, अगर कोई कहता है, "तुम तो विदेश में रहते हो, तुम्हारे लिए सब आसान है," तो इसके पीछे यह भावना हो सकती है कि "काश मैं भी ऐसा कर पाता।"

लेकिन, इसमें एक और दिलचस्प बात है। रिश्तों में इस तरह का व्यवहार अक्सर एकतरफा होता है। अगर कोई आपसे यह उम्मीद करता है कि आप हमेशा उनका हालचाल लें, उन्हें फोन करें, या उनकी परेशानियों में रुचि दिखाएं, तो इसका मतलब यह नहीं कि वे भी ऐसा ही करेंगे। यह 'रिश्तों में अधिकार' की भावना का हिस्सा है, जो भारतीय समाज में बहुत गहराई से मौजूद है। लोग यह उम्मीद करते हैं कि आप उन्हें प्राथमिकता देंगे, लेकिन वे ख़ुद वैसा करने की जिम्मेदारी शायद ही कभी निभाते हैं। उदाहरण के लिए, जो रिश्तेदार यह शिकायत करते हैं कि आप फोन नहीं करते, वे खुद शायद ही कभी आपको फोन करते होंगे। यह आदत केवल रिश्तों को जटिल बनाती है। बार-बार शिकायतों और उलाहनों से रिश्तों में एक दूरी पैदा हो सकती है। सामने वाला व्यक्ति ऐसा महसूस कर सकता है कि उसकी हर बात को लेकर कोई न कोई आलोचना की जाएगी। यह बात धीरे-धीरे रिश्ते की सहजता को खत्म कर सकती है। इस आदत को बदलना आसान नहीं है, क्योंकि यह हमारी संस्कृति और हमारे संवाद के तरीकों में गहराई से रची-बसी है। लेकिन, बदलाव संभव है। सबसे पहले, यह समझना जरूरी है कि रिश्ते सकारात्मकता और खुलेपन से मजबूत होते हैं। अगर कोई दोस्त आपको फोन करता है, तो यह कहना कि, "बहुत अच्छा लगा तुम्हारा फोन आया," रिश्ते को और मजबूत बना सकता है।

दूसरी बात यह है कि रिश्तों में जरूरत से ज्यादा उम्मीदें न पालें। हर रिश्ता बराबरी का नहीं होता, और हर व्यक्ति एक ही तरह से अपना समय या ध्यान नहीं बांट सकता। अगर हम दूसरों पर ज्यादा उम्मीदें लगाना कम करें, तो शिकायतें अपने आप कम हो जाएंगी।

तीसरी बात यह है कि अपनी भावनाओं को सीधे शब्दों में व्यक्त करना सीखें। अगर आप खुश हैं, तो बिना झिझक सामने वाले को बताएं। अगर कोई बात परेशान कर रही है, तो उसे उलाहनों में छिपाने के बजाय साफ-साफ कहें।

उलाहना देना भारतीय समाज का एक अनोखा हिस्सा है। यह हमारे रिश्तों की गहराई और हमारे संवाद की जटिलता को दिखाता है। लेकिन, इसे कम करने की जरूरत है। जब हम अपनी असुरक्षाओं को पहचानेंगे और उन्हें स्वस्थ तरीके से व्यक्त करना सीखेंगे, तो रिश्ते और मजबूत होंगे। तो अगली बार, जब कोई दोस्त कहे, "आज कैसे याद किया?" तो मुस्कुराकर जवाब दें, "याद किया, क्योंकि तुम्हारी याद आ गई थी।" यही बदलाव की शुरुआत होगी। रिश्ते हल्के-फुल्के मजाक और उलाहनों से बाहर निकलकर, सच्ची भावनाओं पर आधारित होंगे। यही वह भारतीय संस्कृति होगी, जो अपने रिश्तों की गहराई और खुलेपन का सही अर्थ समझेगी।

डॉ. पंकज राजवंशी, सिएटल (अमरीका) में एक गैस्ट्रो एंटेरोलॉजिस्ट हैं, जो चिकित्सा के क्षेत्र में अपने योगदान के साथ-साथ सामाजिक मुद्दों पर गहरी रुचि रखते हैं।

श्रद्धालुओं ने पुष्कर सरोवर में आस्था की डुबकी लगाई, पुण्य कमाया

पुष्कर, (निसं)। उत्पति एकादशी के पावन पर्व पर मंगलवार को श्रद्धालुओं ने पुष्कर तीर्थ सरोवर में आस्था की डुबकी लगाकर पुण्य कमाया और ब्रह्मा मंदिर में दर्शन कर सुख समृद्धि की प्रार्थना की। ब्रह्मा मंदिर, रंगनाथ बैकुंठ मंदिर, पुराने वेणुगोपाल मंदिर, वराह मंदिर सहित विभिन्न मंदिरों में धार्मिक आयोजनों के महाआरती हुई तथा प्रतिमाओं का श्रृंगार कर फूल बंगला सजाया गया। उत्पति एकादशी पर्व पर देवी शक्ति के प्रतीक जोगणिया धाम में विराजित सातु बहना का उपासक भंवर लाल वर्मा के सानिध्य में वेद मंत्रोच्चार के साथ पंचामृत अभिषेक व पूजन किया गया। मनमोहक श्रृंगार के बाद महाभोग लगाया गया देर शाम को आरती हुई। पंडित कैलाशनाथ दाधीच ने बताया कि धार्मिक ग्रंथों में 12 एकादशी का जन्म उत्पत्ति एकादशी को बताया गया है, इसी दिन से एकादशी व्रत का शुभारंभ करने का उल्लेख मिलता है। सरोवर के बद्री घाट पर एकादशी महाआरती संघ के सानिध्य में सरोवर की पूजा अर्चना अभिषेक दीपदान के बाद पंडित शशांक पाराशर द्वारा महाआरती की गई। गायक कलाकार रामपाल काला मंडली द्वारा भजन संर्कीतन किया गया।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 27 नवम्बर, 2024

मार्गशीर्ष मास, कृष्ण पक्ष, द्वादशी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2081, चित्रा नक्षत्र गुरूवार प्रातः 7:36 तक, आयुष्मान योग दिन 3:13 तक, कौलव करण सायं 5:06 तक, चन्द्रमा आज 6:07 से तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृश्चिक, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-कर्क, बुध-वृश्चिक, गुरू-वृष, शुक्र-धनु, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में। आज विवाह मुर्हत चित्रा में है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:37 तक, शुभ 10:56 से 12:14 तक, चर 2:52 से 4:10 तक, लाभ 4:10 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 7:00, सूर्यास्त 5:29

मेष
परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

वृष
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी।

मिथुन
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक यात्रा संभव है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

सिंह
आर्थिक/वित्तीय मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। धन हानि हो सकती है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है।

कन्या
व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। धन प्राप्त होगा। शुभ कार्यों में भाग ले सकते हैं।

तुला
व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। घर-गृहस्थी के खर्चों में वृद्धि होगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

वृश्चिक
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

धनु
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

मकर
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

कुंभ
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

मीन
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।